ISSN 2278 - 0327

गोरखपुर जनपद में कृषि क्षेत्र का विकास एवं उसका वर्तमान स्वरूप

डॉ. मोहन लाल आर्य
आचार्य, स्कूल ऑफ सोशल साईंसिज, भूगोल विभाग
आईएफटीएम विश्वविद्यालय, मुरादाबाद उ०प्र०

सविता सिंह
शोध छात्रा, स्कूल ऑफ सोशल साईंसिज, भूगोल विभाग
आईएफटीएम विश्वविद्यालय, मुरादाबाद उ०प्र०

सार:-

प्रस्तुत शोध पत्र में गोरखपुर जनपद में कृषि क्षेत्र का विकास एवं उसका वर्तमान स्वरूप का भौगोलिक विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। फसलों के सफल उत्पादन के लिये जल, वायु, धूप और भूमि ऐसी आवश्यकताएं हैं, जिनके बिना हमारा काम नहीं चल सकता। इन चार आधारभूत आवश्यकताओं में से भूमि सीमित है और इसको घटाया-बढ़ाया नहीं जा सकता, जबकि वायु और धूप प्राकृतिक देन है। अत: इन पर भी हमारा कोई वश नहीं है। कृषि को किस प्रकार और किस रूप में, किस पद्धति और उसके विकास का आधार क्या हो से सभी उस क्षेत्र के कृषि विकास पर निर्भर करता है और उसका का वर्तमान क्या स्परूप है यह भी विकास की प्रक्रिया पर ही निर्भर होता है। यही जानने का प्रयास प्रस्तु शोध पत्र में किया गया है। जिसके लिए प्राथमिक एवं द्वितीय स्त्रोतों के आंकड़ों का प्रयोग किया गया है। साथ ही साथ शोध की सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

मुख्य शब्द: - कृषि, कृषि क्षेत्र, भौगोलिक स्थिति, उपजाऊ मिट्टी, कृषिगत भूमि

प्रस्तावना:-

गोरखपुर जनपद कृषि प्रधान क्षेत्र है क्योंकि क्षेत्र की कार्यशील जनसंख्या का 58.19 प्रतिशत भाग प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से कृषि से सम्बन्धित है। अर्थात् गोरखपुर जनपद की प्रधान आर्थिक क्रिया कृषि है, जो अर्थ व्यवस्था का मूल आधार है। कुल क्षेत्रीय आय का 72.8 प्रतिशत भाग कृषि उत्पादों से प्राप्त होता है। समतल एवं उपजाऊ भूमि, कॉप मिट्टी, विस्तृत एवं प्रचुर जलापूर्ति, विशाल जनसमूह, मानसूनी जलवायु आदि कारकों ने गोरखपुर जनपद को प्रमुख कृषि क्षेत्र का स्वरूप प्रदान किया है। यदि हम स्वतन्त्रता से पूर्व एवं बाद के समय में कृषि क्षेत्रों का अध्ययन करें, तो व्यापक परिवतर्न दिखाई पड़ते हैं क्योंकि विगत वर्षों में वाह्य प्रभाव, मानव बसाव प्रसार एवं तदनुसार कृषि क्षेत्रों का विकास, वैज्ञानिक प्रगति तथा औद्योगिकीकरण आदि कारकों ने कृषि क्रिया एवं उसके स्थानिक वितरण और उपयोगिता को प्रभावित किया है।

स्वतंत्रता प्राप्ति से पूर्व गोरखपुर जनपद का कृषि कार्य मलू रूप से खेती में फसल उत्पादन से सम्बन्धित रहा है। इसके साथ ही पशु पालन एवं उद्यान कृषि भी कृषि का अभिभाज्य अंग थी क्योंकि लम्बी अवधि में अनियोजित ढंग से विकसित स्वाबलम्बी कृषि अर्थ व्यवस्था में पौधों, वृक्षों एवं पशुओं का मिश्रित एवं अभिभाज्य सम्बन्ध था। गोरखपुर जनपद कृषि प्रधान क्षेत्र होने के कारण यहाँ पर पशुपालन का मुख्य उद्देश्य कृषि कार्यों में सहयोग लेना था, परन्तु गाय, भैंस मुख्य रूप से दूध प्राप्ति के लिए पाली जाती रही है। भारत के अन्य क्षेत्रों के समान गोरखपुर जनपद में भी खरीफ़ रबी व जायद तीनों फसलें उगाई जाती थीं जिनमें खाद्यान्न- धान, मक्का, ज्वार-बाजरा, गेहूँ एवं जौ, दालें-चना, अरहर, मसूर, मूँग, मटर, उडद़, तिलहन- मूँगं फली, सरसों, तिल, सूरजमुखी, अलसी तथा अन्य फसलें - गन्ना, कपास, तम्बाकू, मैन्था घास, आलू व शाक-सब्जियाँ आदि उगाई जाती थीं। गोरखपुर जनपद में फसलों के उत्पादन क्षेत्रफल एवं प्रतिरूप में व्यापक परिवर्तन दिखाई पडते हैं। स्वतंत्रता पूर्व 1950-51 तक का हम अवलोकन करें, तो व्यापक परिवर्तन हुए है, जिनका श्रये कृषि पद्धतियों में विकास, कृषि में यन्त्रों का प्रयोग, उर्वरकों का विपुल मात्रा में प्रयोग, सिंचाई साधनों का विकास एवं बढ़ते औद्योगीकरण को जाता है क्योंकि कृषि व्यवसाय न होकर उद्योग बन चुकी है।

अत: कृषकों के दृष्टिकोण, उनकी क्षमता एवं कृषि पद्धति में अनेक परिवर्तन परिलक्षित होते हैं। उपरोक्त सभी कारकों के संयुक्त प्रभाव से गोरखपुर जनपद में फसलों के उत्पादन, प्रतिरूप में अनेक परिवर्तन हुए हैं क्योंकि बीसवीं सदी के प्रारम्भिक वर्षों में ज्वार-बाजरा, मक्का, जौ, चना एवं कपास आदि प्रमुख फसलें थीं, जिनका प्रति हेक्टेयर उत्पादन आदि आज की अपेक्षा बहुत कम था।

स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात कृषि यन्त्रों हेतु लोहे का प्रयोग थ्रेशिगं मशीन, पम्पिगं सेट्स, घोड़े चलित लोहे का हल, टैक्टर आदि के रूप में प्रयोग किया गया। कृषि सम्बन्धी कार्यों को दक्षता के साथ लिया गया, जो भूमि सुधार के लिए आवश्यक कदम था। इसके अतिरिक्त कृषि संस्थानों की सहायता से अनके प्रकार के उन्नत बीज, मशीन, उर्वरक, कीटनाशक दवाओं की कृषि में आपूर्ति हुई। नवीनतम कृषि यन्त्रों-बीडर, लेवलर, स्प्रेयर, बिजोअर, कम्बाईन, हार्बेस्टर, स्टम्प-जम्प आदि के प्रयोग से कृषि उत्पादकता में वृद्धि हुई है। यातायात के विकास के फलस्वरूप आयात-निर्यात में तेजी आयी। तीव्र वाहनों के

कारण कृषि के साथ ही पशुपालन एवं मुर्गीपालन आदि को भी प्रश्रय मिला। इस प्रकार कृषि क्रान्ति के फलस्वरूप कृषि के सभी क्षेत्रों (नयी तकनीकी, पद्धतियों, प्रविधियों, प्रतिरूपों, व्यवस्थाओं एवं प्रकारों) में विकास एवं विस्तार हुआ। कृषि में अनके प्रकार के रासायनिक उर्वरकों, कीटनाशक दवाईयों, उर्वरता संरक्षण हेतु उचित फसल-चक्र शस्य संयोजन, शस्य सन्तुलन आदि का भी प्रयोग अधिक उत्पादन हेतु किया जाने लगा।

भूमि उपयोग की प्रवृत्तिः -

भूमि उपयोग से तात्पर्य किसी क्षेत्र के कुल भौगोलिक या प्रतिवेदित क्षेत्रफल का विभिन्न कार्यों में प्रयुक्त होने से होता है। विभिन्न क्षेत्रों में भूमि उपयोग को प्रभावित करने वाले कारकों में विविधता होते हुए भी सामान्यतः इसे दो प्रमुख प्रकार के कारक प्रभावित करते हैं-

(अ) **भौतिक कारक**- जिनके अन्तर्गत धरातलीय स्वरूप, जलवायु, मिट्टी की किस्म व उर्वरता आदि सम्मिलित है।

(ब) **मानवीय कारक** - जिनके अन्तर्गत जनसंख्या, उसका घनत्व एवं वितरण, कृषक समाज एवं तकनीकी ज्ञान का स्तर तथा उससे उत्पन्न सांस्कृतिक परिदृश्य आदि सम्मिलित है। प्रायः इन कारकों विशेषतः मानवीय कारकों में परिवर्तन के साथ-साथ ही भूमि उपयोग में भी परिवर्तन होता रहता है। परन्तु सुविधा की दृष्टि से इन श्रेणियों को कम करके भूमि उपयोग के लिए प्रतिवेदित क्षेत्र को पॉचं प्रमुख संवर्गों के अन्तर्गत रखा गया है-

1. **वन, चारागाह एवं उद्यान** - इस संवर्ग के अन्तर्गत रक्षित तथा आरक्षित सरकारी वनों, चारागाह एवं उद्यान, वृक्षों एवं झाड़ियों के क्षेत्र को सम्मिलित किया गया है।

2. **कृषि के अतिरिक्त अन्य कार्यों में प्रयुक्त भूमि** - इस संवर्ग के अन्तर्गत कृषि के अतिरिक्त अन्य कार्यों जैसे- सड़क, तालाब तथा मकानों आदि में प्रयुक्त भूमि सम्मिलित की जाती है।

3. **परती भूमि** - इसमें वर्तमान तथा अन्य परती को सम्मिलित किया गया है।

4. **शुद्ध बोया गया क्षेत्र** - इस संवर्ग में वर्ष में बोया गया वास्तविक क्षेत्र सम्मिलित किया जाता है।

उपरोक्त संवर्गों के अन्तर्गत दो अन्य संवर्ग को जो उपरोक्त संवर्गों में ही सम्मिलित होते है, निम्नलिखित है-

1. **बहुफसली क्षेत्र** - यह शुद्ध बोये गये क्षेत्र का वह भाग होता है जिसमें वर्ष में एक से अधिक बार फसलें उगाई जाती हैं।

2. **सकल बोया गया क्षेत्र** - यह शुद्ध बोये गये क्षेत्र तथा बहुफसली क्षेत्र का योग होता है।

भूमि उपयोग में परिवर्तनः-

गोरखपुर जनपद के भूमि उपयोग का उपरोक्त शीर्षकों में वर्गीकरण करके अध्ययन करने से स्पष्ट है कि 2001 से 2019 तक भूमि उपयोग के प्रतिरूप में निम्न परिवर्तन हुए है। 2001 में कृषि के अतिरिक्त अन्य उपयोग की भूमि तथा शुद्ध बोया गया क्षेत्र कुल प्रतिवेदित क्षेत्र का क्रमशः 42000 तथा 254765 हेक्टेयर था, जो 2019 में क्रमशः 49630 तथा 237998 हेक्टेयर बढ़कर क्रमशः 7630 तथा 16767 हेक्टेयर हो गया, जबकि 2001 में वन, उद्यान एवं चारागाह, कृषि अयोग्य ऊसर एवं बंजर भूमि, परती भूमि कुल प्रतिवेदित क्षेत्र का क्रमशः 8833, 4317 तथा 12796 हेक्टेयर था, जो 2019 में घटकर क्रमशः 9512, 4300 व 13120 हेक्टेयर हो गया। इसके अतिरिक्त दो फसली क्षेत्र में सर्वाधिक वृद्धि हुई, 2001 में यह क्षेत्र मात्र 136436 हेक्टेयर था, जो 2019 में बढ़कर 150600 हेक्टेयर हो गया। जोकि तालिका संख्या 1 से स्पष्ट है-

तालिका-1

गोरखपुर जनपद में भूमि उपयोग का परिवर्तित स्वरूप 2001-2019 क्षेत्रफल हेक्टेयर में

भूमि उपयोग के संवर्ग	2001–02	2002–03	2003–04	2008–09	2009–10	2010–11	2016–17	2017–18	2018–19
कुल प्रतिवेदित क्षेत्र	335223	335223	335234	335217	335217	335217	335217	335217	335217
वन क्षेत्र, उद्यान एव चारागाइ	8833	9008	9268	8700	8791	8723	8801	9512	9512
कृषि के अतिरिक्त अन्य उपयोग की भूमि	42000	42520	43213	46087	46511	46619	49290	49480	49630
कृषि अयोग्य ऊसर एवं बंजर भूमि	4317	3468	3557	4061	4220	4052	4300	4300	4300
परती भूमि	12796	14972	15242	19939	17841	23364	11410	13080	13120
शुद्ध बोया गया क्षेत्र	254765	252932	251758	247543	249099	243883	238036	238026	237998
एक से अधिक बार बोया गया क्षेत्र	136436	133576	135608	130788	132867	133858	164049	150741	150600

स्रोत- 1- उ०प्र० के कृषि ऑकड़े कृषि निदेशालय, उ०प्र०, लखनऊ

2-सांख्यिकीय पत्रिका, गोरखपुर जनपद, 2009, 2020

3-सांख्यिकीय डायरी, उ०प्र०, 1986, अर्थ एवं संख्या प्रभाग, राज्य नियोजन संस्थान, उ०प्र०, लखनऊ, पृष्ठ- 113

गोरखपुर जनपद एक कृषि प्रधान क्षेत्र है। परन्तु यहॉ के कृषक समाज में शिक्षा की कमी, अज्ञानता एवं आधुनिक कृषि पद्धति के प्रति उदासीनता आदि मानवीय पक्ष की निर्बलताओं के परिणामस्वरूप कृषि क्षेत्र में विकास की गति अत्यन्त धीमी अर्थात् जिसे नगण्य वृद्धि की संज्ञा दी जा सकती है, हुई है। गोरखपुर जनपद का प्रतिवेदित क्षेत्र 2001-02 में 335223 हेक्टेयर था, जो 2018-19 में बढ़कर 335217 हेक्टेयर हो गया। जनपद में नदियों द्वारा बाढ़ से जनपद की सीमाओं में परिवर्तन होने के कारण प्रतिवेदित क्षेत्र अधिक हो गया है। 2001-02 में जनपद में शुद्ध बोया गया क्षेत्र 254765 हेक्टेयर था, जो कुल प्रतिवेदित क्षेत्र का 75.99 प्रतिशत था, जो 2006-07 में 237998 बढ़कर हेक्टेयर हो गया, जो कुल प्रतिवेदित क्षेत्र का 70.99 प्रतिशत है। जोकि तालिका संख्या 2 तथा 3 से स्पष्ट है।

तालिका संख्या-2

गोरखपुर जनपद में कृषि क्षेत्र में परिवर्तन 2001-2019

वर्ष	प्रतिवेदित क्षेत्र हेक्टेयर में	शुद्ध बोया गया क्षेत्र	कृषि क्षेत्र में परिवर्तन	परिवर्तन प्रतिशत में
2001–02	335223	254765	80458	24.00
2002–03	335223	252932	82291	24.54
2003–04	335234	251758	83476	24.90
2008–09	335217	247543	87674	26.15
2009–10	335217	249099	86118	25.69
2010–11	335217	243883	91334	27.24
2016–17	335217	238036	97181	28.99
2017–18	335217	238026	97191	28.99
2018–19	335217	237998	97219	29.00

तालिका संख्या -3

गोरखपुर जनपद में कृषि क्षेत्र का स्वरूप 2001-2019

वर्ष	प्रतिवेदित क्षेत्र हेक्टेयर में	शुद्ध बोया गया क्षेत्र	परिवर्तन प्रतिशत में
2001–02	335223	254765	75.99
2002–03	335223	252932	75.45
2003–04	335234	251758	75.09
2008–09	335217	247543	73.84
2009–10	335217	249099	74.30
2010–11	335217	243883	72.75
2016–17	335217	238036	71.00
2017–18	335217	238026	71.00
2018–19	335217	237998	70.99

दो फसली क्षेत्र -

एक वर्ष में एक क्षेत्र में एक से अधिक बार उगाई जाने वाली फसल को दो फसली क्षेत्र कहते हैं। जनपद में दो फसली क्षेत्र में सर्वाधिक वृद्धि हुई है। इसके प्रमुख कारण बढ़ती हुई जनसंख्या के परिणामस्वरूप खाद्यान्नों की मॉगं में वृद्धि, सिंचाई साधनों में वृद्धि के परिणामस्वरूप सिंचित क्षेत्र का विकास, कृषि पद्धति में सुधार तथा उर्वरकों का बढ़ता हुआ प्रयागे आदि है। 2001-02 में दो फसली क्षेत्र शुद्ध बोये गये क्षेत्र के 53.55 प्रतिशत क्षेत्र था, जो 2018-19 में बढ़कर 63.27 प्रतिशत हो गया। जो कि तालिका संख्या 4 से स्पष्ट है-

तलिका संख्या-4

जनपद में दो फसली क्षेत्र का विकास 1951-2020

(क्षेत्रफल-हेक्टेयर में)

वर्ष	शुद्ध बोया गया क्षेत्र	दो फसली क्षेत्र हेक्टेयर में	दो फसली क्षेत्र में वृद्धि	शुद्ध बोये गये क्षेत्र का प्रतिशत	परिवर्तन प्रतिशत में
2001–02	254765	136436		53.55	24.00
2002–03	252932	133576	2860	52.81	24.54
2003–04	251758	135608	2032	53.86	24.90
2008–09	247543	130788	–4820	52.83	26.15
2009–10	249099	132867	2079	53.33	25.69
2010–11	243883	133858	991	54.88	27.24
2016–17	238036	164049	30191	68.92	28.99
2017–18	238026	150741	–13308	63.32	28.99
2018–19	237998	150600	–141	63.27	29.00

जनपद में कृषि क्षेत्र के स्थिर रहने अथवा कम वृद्धि होने के उपरान्त भी दो फसली क्षेत्र में निरन्तर वृद्धि के परिणामस्वरूप सकल कृषि क्षेत्र में वृद्धि हुई है। सन् 2001-02 में सकल कृषि क्षेत्र 391201 हेक्टेयर था, जो 2018-19 में 388598 हेक्टेयर हो गया। जोकि तालिका संख्या 5 से स्पष्ट है-

तालिका संख्या-5

गोरखपुर जनपद में सकल कृषि क्षेत्र का विकास 2001-02 से 2018-19

वर्ष	सकल बोया गया क्षेत्र	दो फसली क्षेत्र में वृद्धि
2001–02	391201	
2002–03	386508	–4693
2003–04	387366	858
2008–09	378331	–9035
2009–10	381966	3635
2010–11	377741	–4225
2016–17	402085	24344
2017–18	388767	–13318
2018–19	388598	–169

कृषि क्षेत्र में परिवर्तन -

जनपद एक कृषि प्रधान क्षेत्र है। जहाँ की कृषि की प्रमुख विशेषता फसलों की विविधता रही है जिसके लिए विशेषत: धरातल, मिट्टियों की विविधता तथा सिंचाई के लिए जलापूर्ति आदि कारक उत्तरदायी रहे हैं। जनपद के क्षेत्रफल को देखते हुए यहाँ उत्पन्न की जाने वाली फसलों की संख्या को अवश्य ही अधिक कहा जा सकता है। 1950-51 से 2019-20 तक जनपद में प्रमुख फसलों के अन्तर्गत बोये गये क्षेत्र में व्यापक परिवर्तन हुए है। 1950-2020 के मध्य खाद्यान्न फसलों की ही प्रधानता रही है। 1950-51 में खाद्यान्न फसलों के अन्तर्गत बोया गया क्षेत्र जनपद के सकल बोये गये क्षेत्र का 75.96 प्रतिशत था, जो 2019-20 में 47.92 प्रतिशत बढ़कर 76.32 प्रतिशत हो गया। 1950-51 में चावल के अन्तर्गत बोया गया क्षेत्र 46.39 हजार हेक्टेयर था, जो 2019-20 में 170.73 प्रतिशत बढ़कर 179.75 हजार हेक्टेयर हो गया। 1950-51 में गेहूँ के अन्तर्गत बोया गया क्षेत्र 108.36 हजार हेक्टेयर था, जो 2019-20 में 87.36 प्रतिशत बढ़कर 203.02 हजार हेक्टेयर हो गया। इसके विपरीत मोटे अनाज तथा दलहन के क्षेत्रफल में ह्रास हुआ। 1950-51 में मोटे अनाज तथा दलहन के अन्तर्गत बोया गया क्षेत्र क्रमश: 78.20 तथा 36.78 हजार हेक्टेयर था, जो 2019-20 में क्रमश: 70.21 तथा 38.72 प्रतिशत घटकर क्रमश: 23.29 तथा 22.53 हजार हेक्टेयर हो गया।

व्यावसायिक एवं मुद्रादायिनी फसलें यद्यपि जनपद में कम रही हैं, तथापि तिलहन, गन्ना, आलू तथा मैन्था घास की व्यावसायिक फसलों में प्रधानता रही है। जहाँ एक ओर गन्ना, आलू तथा मैन्था घास के अन्तर्गत बोये गये क्षेत्र में वृद्धि हुई है, वहीं दूसरी ओर तिलहन के क्षेत्र में ह्रास हुआ है।

निष्कर्ष:-

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि अध्ययन क्षेत्र में व्यावसायिक एवं मुद्रादायिनी फसलें यद्यपि जनपद में कम रही हैं, तथापि तिलहन, गन्ना, आलू तथा मैन्था घास की व्यावसायिक फसलों में प्रधानता रही है। जहाँ एक ओर गन्ना, आलू तथा मैन्था घास के अन्तर्गत बोये गये क्षेत्र में वृद्धि हुई है, वहीं दूसरी ओर तिलहन के क्षेत्र में ह्रास हुआ है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची:-

- लीलावती (2001): गण्डक नहर क्षेत्र में आर्द्र भूमि का स्वरूप एवं प्रबन्धन, अप्रकाशित पी-एच०डी० शोध प्रबन्ध, दी०द०उ०गो०वि०वि०, गोरखपुर, पृ० 62।
- पटेल, राम बरन (1982): कृषि विकास पर सिंचाई का प्रभाव, उत्तर भारत भूगोल पत्रिका, अंक 18, संख्या 1, उत्तर भारत भूगोल परिषद, गोरखपुर, पृ० 2।
- मिश्र, श्रीकांत (1976): भारत में कृषि-विकास, दि मैकमिलन कम्पनी, आफइण्डिया लि०, नई दिल्ली, पृ0 29।
- सिंह, एम० (1960): पूर्वी उ०प्र० में भूमि उपयोग, अप्रकाशित पी-एच०डी० शोध प्रबन्ध, बी०आर० अम्बेडकर विश्वविद्यालय, आगरा, पृ० 40।
- चौहान, शिव ध्यान सिंह (1974): भारतीय परिवहन व्यवस्था, उ०प्र० हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, लखनऊ, पृ० 25।
- जे० सिंह (1964): ट्रांस्पोर्ट ज्योग्राफी ऑफ साउथ बिहार बी०एच० यू० प्रेस, वाराणसी, पृष्ठ- 1,2
- चतुर्भुज मामोरिया (1984): भारत का आधुनिक वृहद भूगोल , आगरा, पृष्ठ- 214
- वाडिया व कृष्णन (1956): इन्ट्रोडक्शरी नोटस ऑन ज्योलॉजीकल फक्शन ऑफ दी सॉयल्स ऑफ इण्डिया, एग्रीकल्चर एण्ड लिवस्टोक इन इण्डिया, दिल्ली, पृष्ठ- 77
- वटिगं, टी० ब्रियने (1969)- द ज्योग्राफी ऑफ स्वाइल्स, लन्दन।
- किगं, थामसन (1953)- वाटर, मिरोकिल ऑफनेचर, न्यूयार्क।
- केण्टर, लियोनार्ड, एम0 (1964)- ए वर्ल्ड ज्योग्राफी ऑफ इरीगेशन, लन्दन।
- ई० अहमद व डी० के० सिंह: रीजनल प्लानिगं विद पर्टिकुलर रेफरेन्स टू इण्डिया, नई दिल्ली, 1980, वाल्यमू - 2 पृष्ठ- 11
- एडरसन, आर० सी० एल०, मॉस, ए० (1971)- सिल्यूलेशन ऑफ इरीगेशन सिस्टम: दी एफैक्ट ऑफवाटर सप्लाई एण्ड ऑपरेटिगं रूल्स ऑन प्रोडक्शन एण्ड इनकम ऑफइरीमेटिड फारमर्स, इकोनोमिक रिसोर्स सर्वे टेक्नीक, बुलेन, 1431
- सी क्लार्क (1951): दी कन्डीशन ऑफएकोनोमिक प्रोग्रेस, लन्दन, पृष्ठ-401
- आर० सी० तिवारी एवं वी० एन सिंह (1998): कृषि भूगोल, इलाहाबाद, पृष्ठ- 48,49
- वाई० जी० जोशी (1972): नर्मदा बेसिन का कृषि भूगोल, भोपाल, पृष्ठ-84
- Banerjee, A.K. : The Nath Yogi Sampraday and The Gorakhnath Temple, P.12.
- District Gazetteer (1987) :District Gazetteer- Gorakhpur P.1 Deptt of District Gazetters, Lucknow, Uttar Pradesh, Pg. 3
- District Gazetteer (1987): District Gazetteer- Gorakhpur P.1 & Deoria P.1 Dept of District Gazetters, Lucknow, Uttar Pradesh.
- Oldham, R.D. (1917) : The Structure of Himalayas & Gangetic Plain, Memoires of the Geological Survey of India, Calcutta, Vol, XI, II, Pt 11, Pg 82.
- Pathak, V.N. : History of Kosala up to the Rise of the Mauryas, P. 238 ;
- Singh, J. (1979): Central Places and Spatial Organisation in a Backward Economy: Gorakhpur Region: A Study in Integrated Regional Development, Uttar Bharat Bhoogol Parishad, Gorakhpur, PP. 30-31.
- Singh, R.L. (Ed.) (1971): A Regional Geography of India, N.G.S.I. Varanasi, PP. 190-194.
- Valmiki Ramayana, Uttrakand, ch 102; Pandey, Dr. R.B.: Gorakhpur Janapada ka Itihasa Aur Usaki Kastriya Jatiyan, P.4.
- Wadia, D.N. (1939); Geology of India, London, P. 385.